३. मुकदमा

– *गोविंद शर्मा*

पात्र : महाराज, मंत्री, हवा, पानी और कुछ लोग । **(महाराज का दरबार । महाराज सिंहासन पर बैठे हैं । एक तरफ मंत्री व दरबारीगण बैठे हैं, सामने अन्य लोग बैठे हैं ।)**

महाराज : मंत्री जी ! शिकायत करने वाले लोग आ गए हैं ?

मंत्री : **(खड़े होते हुए)** हाँ, महाराज !

महाराज : जिनके बारे में शिकायत आई है, क्या उन लोगों को भी यहाँ बुला लिया गया है ?

मंत्री : हाँ, महाराज ! आज सब शिकायतें हवा और पानी के बारे में हैं । वे पास के कमरे में बैठे हैं ।

महाराज : ठीक है, मुकदमे की कार्यवाही शुरू करें । पहले पानी को बुलाया जाए । **(मंत्री इशारा करते हैं । भीगे कपड़े पहने एक लड़का हाजिर होता है । उसके कपड़ों के भीतर छिपे टेपरिकॉर्डर से पानी के बहने की कलकल आवाज सुनाई दे रही है ।)**

पानी : महाराज की जय हो ।

महाराज : पानी ! तुमसे इन लोगों की शिकायत है । यदि शिकायत सच साबित हो गई तो तुम्हें राज्य के कानून के अनुसार दंडित किया जाएगा ।

पानी : महाराज, मुझे नहीं मालूम कि ये लोग मुझसे क्यों नाराज हैं । मैं एकदम निर्मल हूँ महाराज !

मंत्री : महाराज, लोगों की पहली शिकायत यही है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा है । यह नदियों और गह्वरों में बहते समय गंदगी और बीमारियाँ अपने साथ बहाकर सब जगह पहुँचा देता है ।

पानी : महाराज, ये लोग पहले की तरह पानी की रखवाली नहीं करते हैं । पशुओं को जोहड़ के भीतर तैरने छोड़ जाते हैं । पशु अपनी गंदगी तालाब में छोड़ जाते हैं । गाँव की दूसरी गंदगी भी तालाब में फेंक दी जाती हैं । नदियों में कारखानों की गंदगी व शहर के गंदे नाले का पानी छोड़ा जाता है । महाराज, मैं अपने आप गंदा नहीं होता । मुझसे शिकायत करने वाले ही गंदा और दूषित करते हैं ।

परिचय

जन्म : १९४६, संगरिया (राजस्थान)
परिचय : गोविंद शर्मा जी ने बाल कहानी, बाल उपन्यास, नाटक, व्यंग्य, जीवनी, लघुकथा आदि सभी विधाओं में लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'दीपू और मोती', 'डोबी और राजकुमार' (बाल उपन्यास) 'हमें हमारा घर दो', 'मेहनत का मंत्र' (कहानी संग्रह), 'नया बाल दिवस' (नाटक संग्रह) 'कुछ नहीं बदला', 'जहाज के नये पंछी' (व्यंग्य संग्रह) 'रामदीन का चिराग' (लघुकहानी संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में नाटककार ने जल एवं वायु प्रदूषण पर प्रकाश डाला है । लोग प्रदूषण के मूल कारण का पता नहीं लगाते । वे केवल दूसरों पर दोषारोपण करते हैं । लेखक का कहना है कि प्रदूषण का मूल कारण मानव ही है । अतः हमें प्रदूषण को समाप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाने चाहिए ।

महाराज : भाइयो, आपके पास इसका क्या जवाब है ?**(लोग आपस में फुसफुसाकर बातें करते हैं, फिर उनमें से एक बोलता है ।)**

एक : महाराज, यह तो मान लिया पर कहीं बरसना, कहीं नहीं बरसना, यह तो इस पानी की मनमानी है।

पानी : नहीं, महाराज, मुझ पानी की मर्जी कहाँ चलती है । जिधर ढलान हो, जहाँ का माहौल अनुकूल हो, वहाँ मुझे जाना ही पड़ता है । इन लोगों ने पहाड़ियों को काटकर वहाँ मैदान बना दिए हैं । पेड़ काट डाले हैं । वन नष्ट कर दिए हैं । ऐसी जगह बरसात कैसे हो सकती है? वर्षा न होने के लिए भी यही लोग जिम्मेदार हैं।

दूसरा : अधिक वर्षा के लिए कौन जिम्मेदार है ?

पानी : जो बादल बना है, वह तो बरसेगा ही । फिर जहाँ वर्षा का पानी बहना चाहिए, जहाँ नदी बहनी चाहिए, जहाँ मेरे सुस्ताने की पुरानी जगह होगी, वहाँ तो मैं जाऊँगा ही । लोगों ने ऐसी जगहों पर घर बना लिए हैं । ऐसे घर तो डूबेंगे ही । मैं इनकी बनाई गलियों-नालियों में घूमता रहूँ, यह कैसे संभव है ?

(लोग फिर आपस में बात करते हैं ।)

तीसरा : महाराज, हमारा गाँव सदियों से ऊँची जगह पर बसा हुआ है। हमने नीची जगहों पर कोई घर नहीं बनाया है फिर भी इस बार हमारा गाँव बाढ़ का शिकार हुआ है । महाराज, पानी पागल हाथी की तरह चलता है । आँख मूँदकर चलता है ।

पानी : नहीं महाराज, मैं देखकर चलता हूँ तभी तो ढलान की तरफ जाता हूँ । कभी ऊँची जगह पर चढ़ने की कोशिश नहीं करता हूँ । ये लोग जानते हैं कि इनके गाँव के पास एक पहाड़ है । पहले उसपर बहुत से वृक्ष होते थे । पहाड़ से उतरते समय मैं वृक्षों के बीच में से होकर धीरे-धीरे आता था और सीधे पानी के रास्ते यानी नदी, नाले में बहता था । अब लोगों ने पहाड़ के वृक्ष साफ कर दिए हैं । मैं वहाँ से उतरता नहीं हूँ बल्कि लुढ़कता हुआ नीचे आता हूँ। मुझे खुद पता नहीं चलता कि नीचे मैं कहाँ गिरूँगा ? अगर वृक्ष होते तो ऐसा नहीं होता । इस बात के लिए ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं ।

महाराज : कोई और शिकायत ? **(कोई नहीं बोलता)** तुम्हारी चुप्पी इस बात की गवाह है कि तुमने भी इन कारणों को मान लिया है । तुम्हारा भला इसी में है कि अपनी गलतियाँ सुधारो और पानी को निर्मल तथा उपयोगी रहने दो ।

अस्पताल में अपने किसी बीमार रिश्तेदार से मिलकर उनके अनुभव सुनिए ।

असंतुलित आहार, जंक फूड से स्वास्थ्य की होने वाली हानि की जानकारी पढ़िए और चार्ट बनाइए ।

(दूसरा दृश्य)

(वैसा ही दरबार । इस बार पानी की जगह हवा है । हवा बनी लड़की के पंख उड़ रहे हैं । परदे के पीछे रखे पंखे की हवा सीधे उसपर पड़ रही है । साँय-साँय की हल्की आवाज आ रही है ।)

महाराज : मंत्री जी, हवा के प्रति लोगों की क्या शिकायतें हैं ?

(एक आदमी आगे आता है)

आदमी : महाराज की जय हो, महाराज आज-कल हवा में खुशबू नहीं होती । यह हर समय हमारे यहाँ बदबू फैलाती है । इसकी बदबू के कारण रहना मुश्किल हो गया है ।

हवा : महाराज, यह आरोप झूठा है । बदबू के कारण तो मेरा जीना कठिन हो गया है । अपने-आपमें मेरे पास न तो खुशबू है न बदबू । पहले ऐसा नहीं होता था । आज-कल ये लोग मरे हुए पशु-पक्षियों को यहाँ-वहाँ डाल देते हैं । उनके कारण मैं बदबूवाली हो जाती हूँ । इनके कारखानों से निकली गंदगी और गैसें मुझमें घुल जाती हैं और यह बदबू दूर तक फैलती रहती है । मुझे याद है कि एक बार भोपाल के एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझपर सवार होकर दूर-दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग रात में सोए हुए ही मौत के मुँह में चले गए थे । इन लोगों से कहिए कि ये गंदगी के ढेर न लगाएँ, सफाई रखें । कचरे से कंपोस्ट खाद बनाएँ ।

आदमी : लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्टी डाल देती हो, सब कुछ तबाह कर देती हो, क्या इसका हमने तुम्हें न्योता दिया था ?

हवा : मैं किसी के निमंत्रण का इंतजार नहीं करती । चलना मेरा काम है । आप कहते हो तो लो, मैंने चलना बंद किया । **(हवा का चलना बंद हो जाता है । सभी घुटन महसूस करते हैं ।)**

मंत्री : अरे हवा रानी ! नाराज मत हो । धीरे-धीरे तो चलो, साँस लेना मुश्किल हो रहा है । तुम चलोगी नहीं तो लोग जिंदा कैसे रहेंगे ? **(हवा बहने लगती है ।)**

महाराज : हवा के बारे में कोई और शिकायत ?

औरत : महाराज, हम अपने घर साफ-सुथरे रखते हैं पर हवा आँधी बनकर आती है और हमारे घर रेत और कूड़े से भर देती है । हवा तो बहे पर आँधी क्यों ?

हवा : महाराज, आँधी से इनका मतलब मेरे तेज चलने से है । वैसे तो मैं हर समय बहती रहती हूँ, पर इन्हें जब गरमी लगती है

इस पाठ के आशय से संबंधित उपयुक्त जानकारी का संकलन करके लिखिए ।

तो पंखा चलाकर मेरी गति बढ़ा लेते हैं । उसी तरह जहाँ भी हवा कम होती है, मैं तेजी से वहाँ जाती हूँ । जब मैं तेजी से चलती हूँ तो रेत, मिट्टी, कूड़ा आदि जो भी हल्की चीजें रास्ते में होती हैं, मेरे साथ उड़ने लगती हैं । ये अपने घर और दूकान साफ करके कूड़ा घर के आस-पास गली में या सड़क पर डाल देते हैं । कई बार गाँव के बाहर कूड़े के ढेर लगा देते हैं । इनका फेंका कूड़ा ही वापस इनके घरों में जाता है । महाराज ! लोग अपने गाँव या शहर में पॉलिथिन की थैलियाँ सड़कों पर फेंकते हैं । वे मेरे साथ उड़कर खेतों में फैल जाती हैं और फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं । जैसी करनी वैसी भरनी । इसमें मैं क्या कर सकती हूँ । इससे मेरा भी मन बड़ा दुखी होता है ।

महाराज : मैंने सबकी बात सुनी है । लोग हवा-पानी से दुखी तो हैं पर कसूर इनका नहीं है । लोगों को सफाई की आदत अपनानी होगी तभी ये दूषित होने से बचेंगे । हमें चाहिए कि हम हवा और पानी को अपना दोस्त मानकर उन्हें नुकसान न पहुँचाएँ और इन्हें प्रदूषण से बचाने के उपाय खोजें, उचित कार्यवाही करें । इसमें ही हमारा भला और बचाव है । **(लोग हवा, पानी के प्रति दोस्ती का भाव दिखाते हुए चले जाते हैं ।)**

('मुकदमा : हवा पानी का' संग्रह से)

— o —

संभाषणीय

'पर्यावरण की शुद्धता : मेरी जिम्मेदारी' विषय पर चर्चा में अपनी मौखिक अभिव्यक्ति दीजिए ।

शब्द संसार

गह्वर पुं.सं.(सं.) = गड्ढा
जोहड़ पुं.सं.(दे.) = छोटा प्राकृतिक तालाब
सदियों स्त्री.सं.(अ.)= सौ वर्ष का समय, शताब्दियों
निर्मल वि.(सं.) = स्वच्छ

मुहावरे

आँख मूँदकर चलना = बिना सोचे-विचारे चलना
मौत के मुँह में चले जाना = जान-बूझकर खतरा मोल लेना

कहावत

जैसी करनी, वैसी भरनी = कर्म के अनुसार ही फल का मिलना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१.पानी की मनमानी

२. पानी यहाँ बरसता है

(२) उचित विकल्प चुनकर विधान पूर्ण कीजिए :

१. हवा बदबूदार होने का कारण है कि --------
   (अ) हवा बहती नहीं है ।
   (आ) हवा में कारखानों की गंदगी और गैसें होती हैं ।
   (इ) हवा दूर-दूर से आती है ।

२. हवा पर आरोप लगाया गया था कि --------
   (अ) हवा में शुद्धता नहीं होती ।
   (आ) हवा में नमी नहीं होती ।
   (इ) हवा में खुशबू नहीं होती ।

(३) कारण लिखिए :

१. पानी अशुद्ध होने के कारण –
   १.
   २.
   ३.
   ४.

(४) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. जोहड़ २. साफ-सुथरे

(५) (अ) वृत्त में दिए शब्दों के लिंग तथा वचन के अनुसार वर्गीकरण कीजिए :

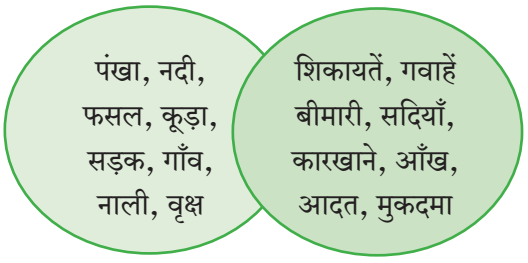

स्त्रीलिंग	पुलिंग	एकवचन	बहुवचन

(६) (ब) शब्द-युग्म बनाइए :

कूड़ा – ……, इधर – ……, गाँव – ……, …… – द्वार, हवा – ……,
सीधा – ……, साफ – ……, झाड़ – ……

अभिव्यक्ति 'बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने के उपाय' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

इन शब्दों से बने मुहावरे तथा उनके अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मुहावरा : ----------	कान	मुहावरा : ----------
अर्थ : ----------		अर्थ : ----------
वाक्य : ----------		वाक्य : ----------
मुहावरा : ----------	नाक	मुहावरा : ----------
अर्थ : ----------		अर्थ : ----------
वाक्य : ----------		वाक्य : ----------
मुहावरा : ----------	सिर	मुहावरा : ----------
अर्थ : ----------		अर्थ : ----------
वाक्य : ----------		वाक्य : ----------

उपयोजित लेखन

अपने ग्राम/नगर/महानगर के संबंधित अधिकारी को बच्चों के खेलने के लिए बगीचा बनवाने हेतु पत्र लिखिए।
(पत्र निम्न प्रारूप में हो)

दिनांक : .....

प्रति,

विषय : ----------

विषय विवेचन :

भवदीय/भवदीया,

नाम : ----------

पता : ----------

ई-मेल आईडी : ----------

CJB4ZX